बन्द करो बकवास


जो बात तुझ में है तेरी तस्वीर में नहीं…।
बन्द करो बकवास, मैं जानती हूं तुम क्या कहना चाहते हो। हां मैंने फोटोग्राफर से अपनी मूंछों पर रीटचिंग करवाई है।
रुख से जरा नकाब उठाओ, मेरे हुज़ूर।
बन्द करो बकवास, और यह मटका मेरे सर से निकालने की कोशिश करो।
हमने तुमको देखा, तुमने हमको देखा ऐसे…?
21
बन्द करो बकवास. मेरी बेटी को देख चुके तो अब मेरी तरफ देखो।

काका के कारतूस



प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के, उत्तर काका हाथरसी के

बलराम फब्यानी, कांकेर (बस्तर)
प्र० : पैसा और इन्सानियत में किसका महत्व ज्यादा है ?
उ० : पैसा ही ईमान है, पैसा ही भगवान,
पैसा हो तो मूर्ख भी, पदवी पाय महान।

हेमंत सोलंकी, नेहरपारा (जयपुर) म० प्र०
प्र० : किसी नेता को कुत्ता काट खाए तो ?
उ० : चौदह इन्जेक्शन तुरन्त कुत्ते को लगवाय,
वरना नेता की जगह कुत्ता खुद मर जाय।

सुरेश कुमार अग्रवाल, सादुलपुर (राजस्थान)
प्र० : लोकनायक हमें छोड़कर क्यों चले गए ?
उ० : समग्र क्रांति क्यों विफल हुई ढूंढ़ो इस कारण को,
कुर्सी-क्रांति खा गई जयप्रकाश नारायण को।

नारायणदास टेकचंदानी, बिलासपुर (म० प्र०)
प्र० : काकाजी, भूत-प्रेत का अस्तित्व आप मानते हैं क्या ?
उ० : हार जायँ जो मंत्रिगण कुछ दिन करें प्रलाप,
उन्हें 'भूत-मंत्री' कहें, बचते रहिए आप।

आलोक खेतली, सिविल लाइन्स, कानपुर
प्र० : पूर्वकाल में युद्ध के समय बिगुल क्यों बजाया जाता था?
उ० : गाजे-बाजे-बिगुल सुन दिल में उमड़े जोश,
दुश्मन के प्रति फौज का, बढ़ जाता आक्रोश।

केवल प्रकाश दुआ, काशीपुर (नैनीताल)
प्र० : जीवन में स्वर्ग के दर्शन कैसे हो सकते हैं, काका ?
कभी बंबई जाइए नोट पिता से छीन,
फिल्मी बंगलों में दिखें स्वर्गलोक के सीन।

रेवतीरमण शर्मा, जयपुर
प्र० : अबकी बार प्रधान मंत्री आप किसे चाहते हैं ?
उ० : चढ़ जायें इस सीट पर, राजनारायण यार,
हास्य-व्यंग्य के कवि घुसें, बने हास्य-सरकार।

भंटासिंह 'अकेला' सुभाष नगर (बेरमो)
प्र० : आजकल ऊंचे-नीचे की परिभाषा क्या है ?
उ० : सत्ता जिसके हाथ में, वह ऊंचा है जीव
नीचा वह जो पिस रहा, पीड़ित-दीन-गरीब

दिनेशपालसिंह रोतेला, कर्णप्रयाग
प्र० : इन्सान को झूठ बोलना किसने सिखाया ?
उ० : बोले लक्खीलाल से झक्कीलाल मुनीम,
इनकम टैक्स वकील से मिली झूठ-तालीम।

विजयकुमार मैथानी, रायपुर (म० प्र०)
प्र० : प्यार में लड़की घास न डाले तो लड़का क्या करे !
उ० : उसकी मम्मी को अगर बना सको तुम सास,
डाले नाक नकेल वह, नित्य चराये घास।

सुरेन्द्रसिंह बबलू, मोरेह (मणिपुर)
प्र० : टूट गया है दिल मेरा, निकले मुंह से हाय,
ऐसी दवा बताइए, टूटा दिल जुड़ जाय।
उ० : कोई लैला ढूंढ़ लो, कर मजनूं की होड़,
प्रेम-प्लास्टर चढ़ाकर, टूटा दिल दे जोड़।

किशोर निर्मला होतवानी, रायपुर (म० प्र०)
प्र० : काकाजी, आप हमारे गाल पर लगाएँगे चाँटा ?
उ० : चाँटा मारें आपको नहीं हमारा बस्स,
हम मारेंगे एक तो तुम मारोगे दस्स।

कुलदीप कौर सेहमी, दमोह (म० प्र०)
प्र० : महंगाई की तरह आपकी दाढ़ी भी बढ़ती रहेगी या घटेगी भी ?
उ० : राजनारायण की तरह हमें नहीं यह भाय,
कभी बढ़ालें औ', कभी दाढ़ी लें मुड़वाय।

दयाल मूलचंदानी, अजमेर
प्र० : ऐसी कौन सी चीज है, जो आपकी शादी के समय भी थी और आज भी है।
उ० : उत्तर इसका साफ है, साधारण-सी बात,
काकी जब भी साथ थी, अब भी है वह साथ।

कमल किशोर कपूर, अमरोहा (उ० प्र०)
प्र० : शायर बहुत से देखे, लेकिन न देखा तुमसा ?
उ० : सूरत अलग-अलग हैं, न्यारे हैं भाग्य-भोगा,
काका तो कई होंगे, लेकिन न हमसा होगा।

चंद्रशेखर गोस्वामी, हरिद्वार (उ० प्र०)
प्र० : पत्नी की नाराजी दूर करने का कोई सरल उपाय बताइए।
उ० : पत्नी को मिलता रहे पति का सच्चा प्यार,
नाराजी से 'ना' हटे, दीखे सदा बहार।

सुधीर श्रीवास्तव, मुजफ्फरपुर (बिहार)
प्र० : हमारे और उसके प्यार के बीच में एक कंस अड़ा है, क्या करें ?
उ० : वह राधारानी बने, तुम बन जाओ श्याम,
दोनों मिलकर कंस का, करदो काम तमाम।

याद के० सुगंध, रिवाड़ी (हरियाणा)
प्र० : आधुनिक फिल्मी गीतों को सुनकर आप पर क्या प्रतिक्रिया होती है ?
उ० : जिन गीतों को श्रवणकर करते डांस 'सुगंध',
हमको उनमें सैक्स की आती है दुर्गन्ध।

नरेन्द्रकुमार निन्दी, कपूरथला
प्र० : आजकल की मोहब्बत में मिलावट कितने प्रतिशत होती है ?
उ० : फिफ्टी-फिफ्टी होय तो, सफल जानिए प्यार,
कम ज्यादा हो जिस तरफ, बिगड़ जाय व्यापार।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।	**काका के कारतूस** दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

दीवाना का नया आश्चर्यजनक आविष्कार

' मोटापे का शर्तिया इलाज '

फिटरेट यंत्र

आविष्कार रजिस्ट्रेशन DW/729/88CM   पेटेन्ट रजिस्ट्रेशन PR 38/28/28 OUI 79

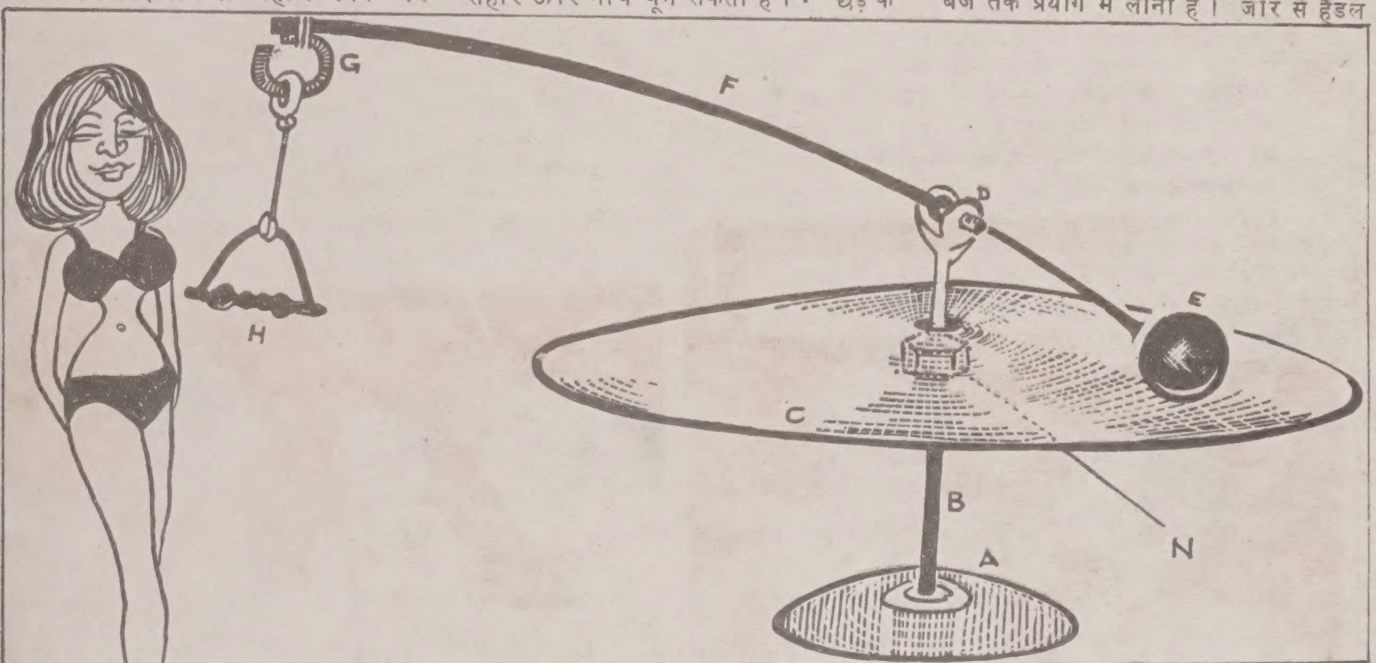
देश की लाखों मोटी-मोटी गोल मटोल बहनों के लिए शुभ सूचना ! हमारे यन्त्र की सहायता से आप अपना शरीर टीना मुनीम जैसा रख सकते हैं । आपको कोई भैंस या हाथी के ताने नहीं दे सकेगा । भोजन पर कोई पाबन्दी नहीं । दिन भर आइसक्रीम, मिठाइयां, केक-पेस्ट्री, चाट, गोलपप्पे और भेलपूरी अपने पेट के लैटर बक्स में डालिए । हमारा फिटरेट उन्हें मोटापा बढ़ाने नहीं देगा । मजे की बात यह है कि आपको इस पर घंटों कसरत नहीं करनी पड़गी । दिन भर में केवल आधे मिनट का समय काफी है । है न क्रांतिकारी बात । यह हमारे वैज्ञानिकों के दो घंटे की सख्त मेहनत का परिणाम है ।

यंत्र—यंत्र बहुत सादा है । उसमें **B** छड़ **A** स्टैंड पर खड़ी है । छड़ पर तीन चौथाई ऊँचाई पर कांसे की वृत्ताकार प्लेट **C** टंगी है । छड़ से लगा एक नट, प्लेट को नीचे नहीं गिरने देगा । छड़ के ऊपरी सिरे पर **D** होल्डर है । होल्डर में लगे समानान्तर कील से **F** छड़ जुड़ी है । छड़ कील के सहारे ऊपर नीचे घूम सकता है । **F** छड़ के कांसे वाली प्लेट के पास वाले सिरे पर लोहे का गोला है । दूसरे सिरे पर **G** हुक के साथ एक तार से **H** हैंडल टंगा है । इस यंत्र को बिजली की आवश्यकता नहीं है ।

कार्य विधि—H हैंडल को पकड़ नीचे खींचिए और प्लेट के समानान्तर आने पर झटके के छोड़िए । गोला ऊपर उठेगा और जोर से **C** प्लेट पर आ लगेगा । यह केवल एकबार करना काफी है ।

कुछ विशेष बातें—यह यन्त्र शीघ्र ही बना कर बाजार में लाने की योजना है । उद्योगपतियों से निवेदन है कि वह इस यन्त्र का निर्माण करना चाहें तो हमसे सम्पर्क करके निर्माणधिकार प्राप्त कर सकते हैं । यह बाजार में आते ही ऐसे बिकेगा जैसे गर्ल्ज कालिज के निकट आलू छोले बिकते हैं । दीवाना के पाठक जिनकी मोटी प्रेमिकायें हैं पहले ही हमें पत्र लिख यन्त्र बुक करा सकते हैं । दीवाना पढ़ने वालों को मूल्य में आठ आने की छूट मिलेगी । पत्र के साथ मोटी प्रेमिका का फोटो आना जरूरी है ।

टॉप सीक्रेट—आप सोच रहे होंगे कि इस यन्त्र से मोटापा कम कैसे होगा ? यह यन्त्र आपको रात के बारह बजे से सुबह के एक बजे तक प्रयोग में लाना है । जोर से हैंडल पकड़ छोड़िए जैसे ही **E** गोला **C** कांसे की प्लेट पर लगेगा जोर की आवाज आयेगी जैसे सौ स्कूलों में सात घंटे एक साथ बजे हों । सारा मोहल्ला नींद खराब करने के लिए आकर आपको दबोचेगा, शायद आपकी पिटाई भी हो । रोज ऐसा करें । पड़ौसी आपका जीना मुश्किल कर देंगे । इस मारपीट और झगड़े में आपको मुटाने का मौका ही नहीं मिलेगा ।





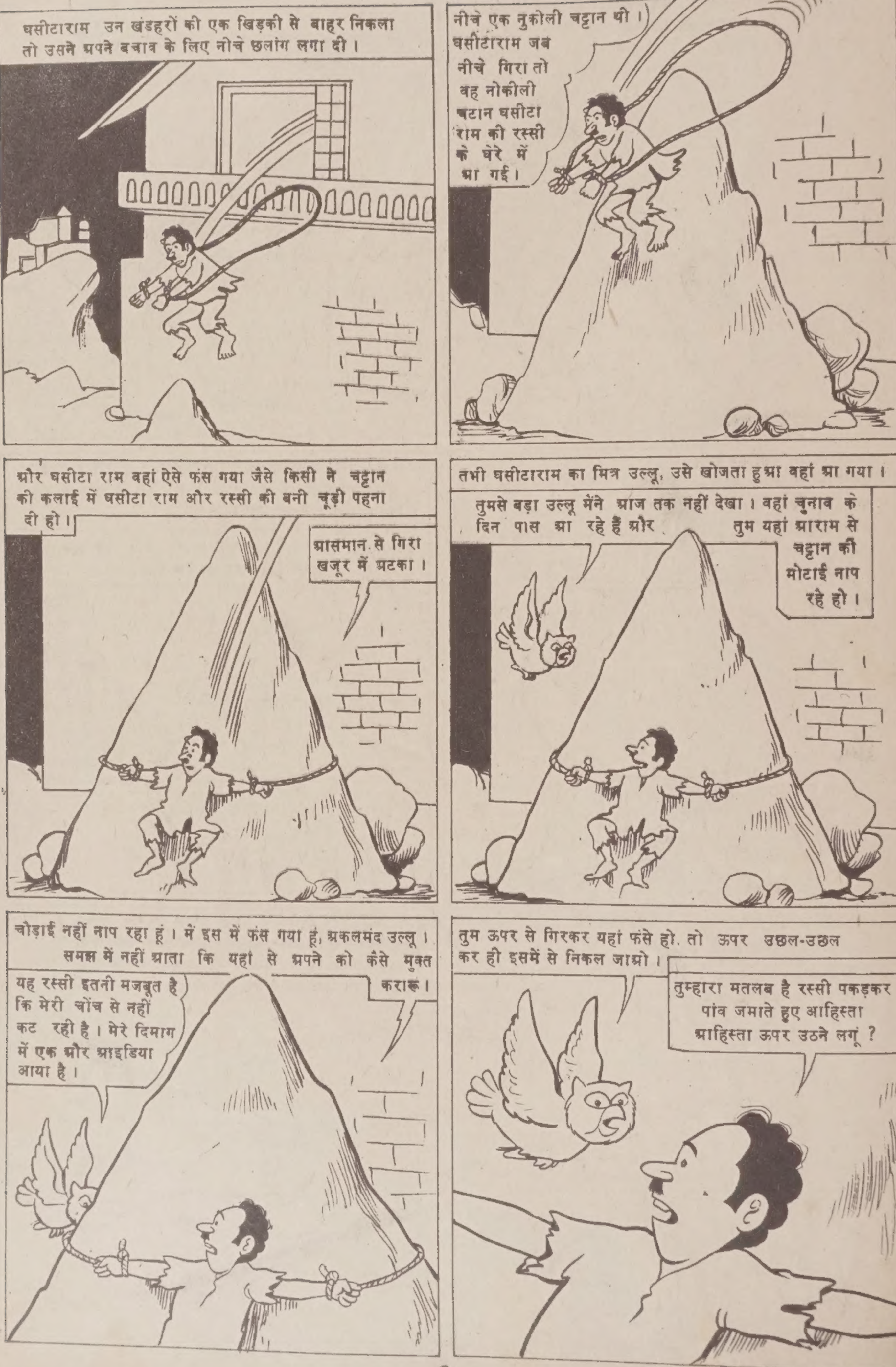
मोटू पतलू

चुनाव के हंगामों में आप ने तरह-तरह के हथकंडे देखे होंगे। पर घसीटा राम ने अपने प्रतिद्वन्दी मोटू का कबाड़ा करने के लिए जो चार सौ बीसियां कीं उनका जवाब नहीं। घसीटाराम ने मोटू की चुनाव सभायें भंग करवाने के लिए और उसका अपहरण करवाने के लिए एक चुनाव बिगाड़ू कम्पनी के गुंडे किराए पर लिए तो यह चाल ऐसी उल्टी बैठी कि इस हेरा-फेरी में घसीटा राम की ही खाट खड़ी हो गई। मोटू की चुनाव सभा की बजाये किराये के गुंडे घसीटा राम की ही चुनाव सभा में पहुंच गये और वहीं उन्होंने घसीटा राम पर सड़े अंडों, टिमाटरों और टूटे जूते की बारिश शुरू कर दी। उसका मंच बम से उड़ा दिया गया और गुंडों ने मोटू के धोखे में घसीटाराम का अपहरण कर लिया। इसके बाद जो हंगामे हुए उनका आँखों देखा हाल आगे प्रस्तुत है। इसके बाद हमें विश्वास है, कि वोट की बात न सही, आप कम से कम घसीटा राम के लंगोट पर अवश्य रहम खायेंगे।






क्या कर रहे हो घनचक्करों। मैंने तुम्हें किराये पर लिया और तुम मेरा ही सत्यानाश कर रहे हो।
अब हमें मोटू किराये पर लेने वाला है।
और हम उसे बताना चाहते हैं कि इनाम पाने वाला काम हम पहले ही कर चुके हैं।
इस करेले को उबालने के लिए हांडी के नीचे आग जला दो, फिर मोटू से मिलने चलेंगे।
लकड़ियों में आग लगाकर वे दोनों गुंडे वहां से चल दिये। हांडी का पानी जैसे गर्म हो रहा था। वैसे ही घसीटा राम की आंखें फटती जा रही थीं।
हे भगवान, यह कसाई मुझे मुर्गी के अंडे की तरह उबाल रहे हैं और तू चुपचाप यह तमाशा देख रहा है।
पानी और अधिक गर्म हुआ तो घसीटा राम ने पूरा जोर लगा कर हांडी से बाहर छलांग लगा दी।
घसीटाराम जितना बेवकूफ है उससे अधिक बेवकूफ उसके अपहरण करता थे। उन्होंने घसीटाराम के हाथ पता नहीं किस तरह बांधे थे कि अब पूरी रस्सी खुलकर उसके दोनों सिरे घसीटाराम के हाथों से बंधे रह गये थे।

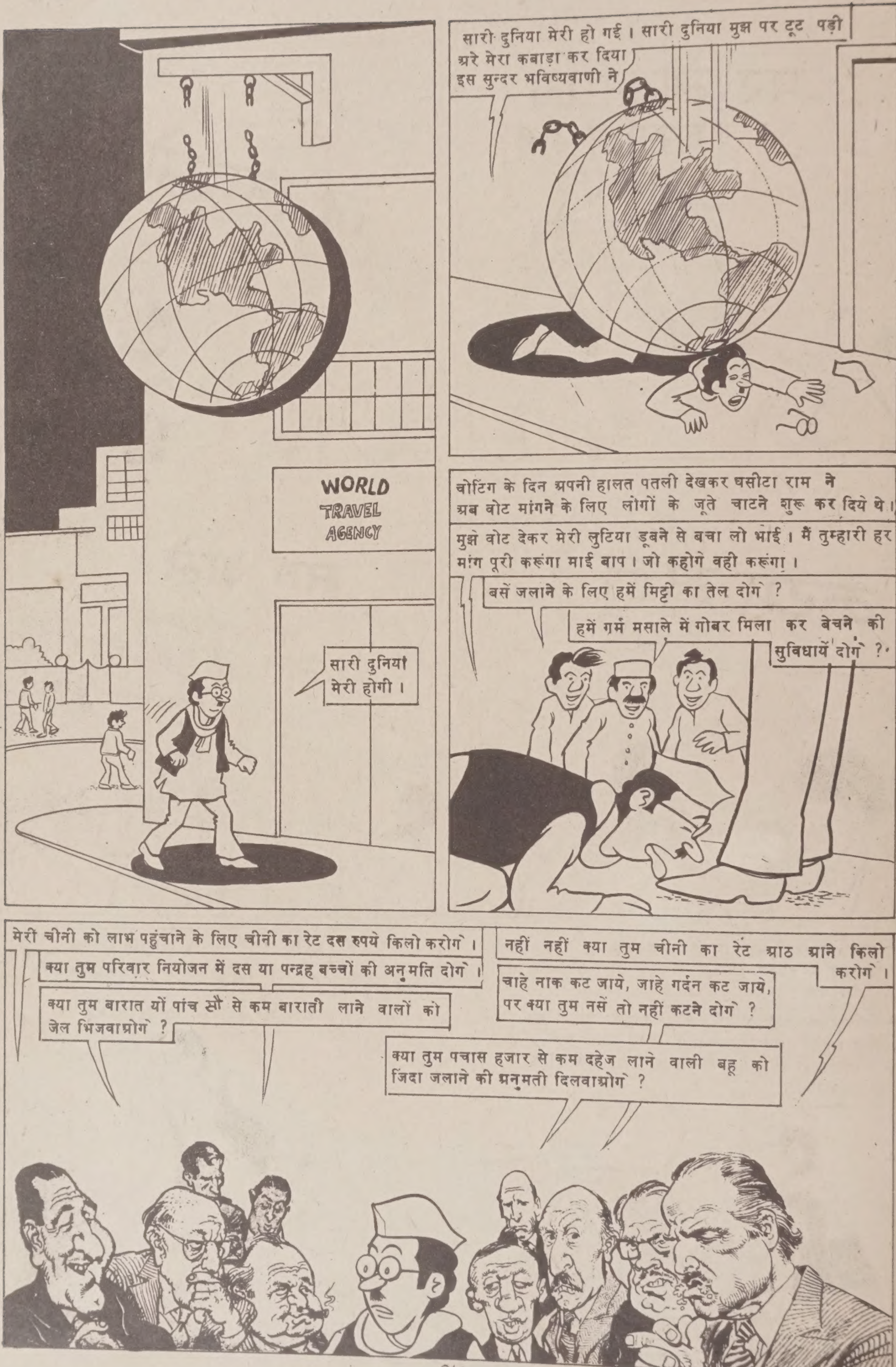

घसीटाराम उन खंडहरों की एक खिड़की से बाहर निकला तो उसने अपने बचाव के लिए नीचे छलांग लगा दी ।
नीचे एक नुकीली चट्टान थी । घसीटाराम जब नीचे गिरा तो वह नोकीली चटान घसीटा राम की रस्सी के घेरे में आ गई ।
और घसीटा राम वहां ऐसे फंस गया जैसे किसी ने चट्टान की कलाई में घसीटा राम और रस्सी की बनी चूड़ी पहना दी हो ।
आसमान से गिरा खजूर में अटका ।
तभी घसीटाराम का मित्र उल्लू, उसे खोजता हुआ वहां आ गया ।
तुमसे बड़ा उल्लू मैंने आज तक नहीं देखा । वहां चुनाव के दिन पास आ रहे हैं और तुम यहां आराम से चट्टान की मोटाई नाप रहे हो ।
चौड़ाई नहीं नाप रहा हूं । मैं इस में फंस गया हूं, अकलमंद उल्लू । समझ में नहीं आता कि यहां से अपने को कैसे मुक्त कराऊं ।
यह रस्सी इतनी मजबूत है कि मेरी चोंच से नहीं कट रही है । मेरे दिमाग में एक और आइडिया आया है ।
तुम ऊपर से गिरकर यहां फंसे हो. तो ऊपर उछल-उछल कर ही इसमें से निकल जाओ ।
तुम्हारा मतलब है रस्सी पकड़कर पांव जमाते हुए आहिस्ता आहिस्ता ऊपर उठने लगूं ?



ऐ···ऐसे ?
हां ऐसे। पांव जमा-जमा कर ऊपर उठते रहो।
घसीटा राम पांव जमाता हुआ चट्टान की चोटी तक उठता चला गया।
और उसने अंत में रस्सी का फंदा निकाल कर चट्टान से नीचे छलांग लगा दी।
इतनी आसान तरकीब मेरी समझ में नहीं आई। मैं भी निरा उल्लू हूं।
देर में सही, पर शुक्र है तुमने अपने को पहचान तो लिया।
घसीटा राम वापस चुनाव दंगल में आया तो मोटू का प्रचार जोर शोर से जारी था और जगह-जगह उसके पोस्टर चिपकाये जा रहे थे। और उसके पोस्टरों का कहीं नाम भी न था।
मोटू को वोट दो
लोटे पर मौहर लगाओ
अपना कीमती वोट मोटू को दें
चुनाव चिन्ह लोटा
मोटू को सफल बनाओ
आपका उम्मीदवार मोटू
भाई मेरे पोस्टर चिपकाने का काम भी सम्भाल लोगे? क्या रेट है तुम्हारा ?
पन्द्रह रुपये सैंकड़ा और दस रुपये सैंकड़ा।
पन्द्रह रुपये और दस रुपये ? यह दो रेट किस हिसाब से हैं,
मोटू को वो
पोस्टर चिपकाने के दस रुपये और फाड़ने के पांच रुपये। अगर हमारे चिपकाये पोस्टरों को फाड़ने का ठेका हमें दूसरी पार्टी से मिल गया तो पोस्टर चिपकाने के दस रुपये आप से ले लेंगे और उन पोस्टरों को फाड़ने के पांच रुपये हम दूसरी पार्टी से ले लेंगे।
पोस्टर चिपकाओगे तुम और फाड़ने का ठेका भी तुम लोगे ?
जी हां, क्योंकि यह बात हमें अच्छी तरह जानते हैं कि हमने पोस्टर कहां कहां चिपकाये हैं।


सत्यानाश हो गया। हर जगह मैं ही रह गया हूं अपना भट्ठा बिठवाने के लिए चलो कोई बात नहीं अब इन पोस्टरों को फाड़ने का ठेका मुझसे ले लो।
इन पोस्टरों को फाड़ने की बजाये हमने इन्हें फाड़ने वालों का सर फाड़ने का ठेका ले रखा है।
मोटू को
चार लाचार घसीटाराम अब वहां से उठ गया था और उसे पता नहीं था कि गोंद लगे जिस पोस्टर पर वह गलती से बैठ गया था वह अब उसकी कमर की रौनक बन चुका था।
बच्चे बड़े, आते जाते सब घसीटाराम पर हंस रहे थे और उसे पता नहीं था कि माजरा क्या है।
बड़ों के मुंह पर हंसते शर्म नहीं आती तुम्हें।
वे पागल हैं जो मुंह पर हंस रहे हैं। हम तो पीठ पीछे हंस रहे हैं।
मोटू को वोट दो
और अब हालत यह थी कि कुत्ते घसीटा राम के पीछे लग गये थे।
हे भगवान मैं कोई गाजर का हलवा हूं जो मुझे खाने के लिए लपक रहे हैं।
घसीटाराम के साथियों को भी पता चल गया था कि चुनाव जीतने के लिए घसीटा राम नाजाईज हथकंडे अपना रहा है। इस लिये चेलाराम और जूडी मास्टर भी घसीटा राम का साथ छोड़ गये थे और अब चुनाव प्रचार में उसे कदम कदम पर हेरा फेरियों का सामना करना पड़ रहा था।
दुर चूहे
अपने वोट का सही उपयोग करना है तो मुझे दान में डालो
ह अभी दही
घसीटा राम सब नेताओं में बड़ा है।


पर
लोकप्रिय घसीटा राम सब का नेता है!
देश बचाओ घसीटा
ज
लाओ
क्या
आपके पास जो मत है वह घसीटा राम को दीजिये
आप के मत घसीटा राम के मत
वाले साथियों की भी मारी गई है
चुनाव की लहर अपने विरुद्ध देख कर घसीटा राम अपनी किस्मत का हाल मालूम करने के लिए एक ज्योतिषी के पास पहुंच गया।
बड़े विचित्र सितारे हैं तुम्हारे लोग तुम्हारे सामने सर झुकायेंगे । तुम्हें हाथों हाथ उठायेंगे। अपने कंधों पर बिठायेंगे। और ऊंची पदवी पर व्रजमान करेंगे । सारी दुनिया तुम्हारी होगी।
सौ रुपये लेकर कितना सुन्दर भविष्य बताया है मेरा।
लोग मुझे कंधों पर बिठायेंगे। ऊंची पदवी पर व्रजमान करेंगे



सारी दुनिया मेरी होगी ।
WORLD TRAVEL AGENCY
सारी दुनिया मेरी हो गई । सारी दुनिया मुझ पर टूट पड़ी
अरे मेरा कबाड़ा कर दिया इस सुन्दर भविष्यवाणी ने
वोटिंग के दिन अपनी हालत पतली देखकर घसीटा राम ने अब वोट मांगने के लिए लोगों के जूते चाटने शुरू कर दिये थे ।
मुझे वोट देकर मेरी लुटिया डूबने से बचा लो भाई । मैं तुम्हारी हर मांग पूरी करूंगा माई बाप । जो कहोगे वही करूंगा ।
बसें जलाने के लिए हमें मिट्टी का तेल दोगे ?
हमें गर्म मसाले में गोबर मिला कर बेचने की सुविधायें दोगे ?
मेरी चीनी को लाभ पहुंचाने के लिए चीनी का रेट दस रुपये किलो करोगे ।
क्या तुम परिवार नियोजन में दस या पन्द्रह बच्चों की अनुमति दोगे ।
क्या तुम बारात यों पांच सौ से कम बाराती लाने वालों को जेल भिजवाओगे ?
नहीं नहीं क्या तुम चीनी का रेट आठ आने किलो करोगे ।
चाहे नाक कट जाये, जाहे गर्दन कट जाये, पर क्या तुम नसें तो नहीं कटने दोगे ?
क्या तुम पचास हजार से कम दहेज लाने वाली बहू को जिंदा जलाने की अनुमती दिलवाओगे ?



आगामी अंक में देखिए, मोटू पतलू एण्ड कम्पनी की एक और नई धमाकेदारी कहानी ।

धारावाहिक उपन्यास

अनहोनी

6

लेखिका-संगीता

'नाथ···।' शोभना नें कहा, पद्मिनी हम लोगों से बहुत प्यार करती है ना···मैं तो स्वयं यह सोचती हूं कि अगर पद्मिनी यहां से चली गई तो मेरा क्या होगा ? मेरी आयु तो वर्षों से घटकर मिनटों की रह जाएगी ।'

'सोचता तो मैं भी यही हूं शोभना··· लेकिन आखिर लड़की को कब तक घर में बिठाकर रखा जा सकता है—लड़की तो चाहे राजा की भी क्यों न हो···एक न एक दिन तो उसे पति के घर जरूर जाना पड़ता है ।'

'लेकिन मैंने इसका एक उपाय सोचा है ।' शोभना ने कहा ।

'वह क्या ?'

'देखिए···हमारी बेटी किसी छोटे-मोटे आदमी की बेटी तो है नहीं···भगवान ने हमें जो करोड़ों की दौलत दे रखी है—उसी की है ।'

'यह तो है···।'

'तो फिर हमें अपनी बेटी के लिए किसी लखपति या करोड़पति घराने में वर खोजने की क्या जरूरत है ।'

'क्या मतलब ।' सेठ साहब चौंक पड़े ।

'अरे···जिस लड़के से हमारी बेटी की शादी होगी वह तो फेरे लेते ही करोड़पति बन जायेगा···इसलिए क्यों न हम अपनी लड़की के लिए कोई भला, शरीफ, गरीब किन्तु पढ़ा-लिखा लड़का ढूंढें जो शादी के बाद हमारे साथ ही रहे···।'

सेठ साहब एकाएक उठकर बैठ गए और बोले—

'वाह शोभना, तुमने मेरी सारी मुश्किलें हल करा दीं—मैं व्यर्थ ही इतने दिनों से उलझन में था और यह सोच कर परेशान हो रहा था कि हमारी पद्मिनी हमसे अलग हो जाएगी ।'

'बस तो फिर ठीक है जो—।' शोभना ने कहा, 'आप पद्मिनी के लिए किसी ऐसे लड़के की तलाश में रहिए और पद्मिनी को कालिज में एम० काम भी करने दीजिए —इस बीच में जब भी कोई अच्छा लड़का मिल जाता है तो उसके साथ हम पद्मिनी की शादी कर देंगे ।'

सेठ साहब यूं संतुष्ट होकर लेट गए जैसे उनकी कोई बड़ी समस्या हल हो गई हो ।'

पद्मिनी ने बेचैनी से करवटें बदली लेकिन उसकी आंखों से नींद कोसों दूर थी—बेडरूम में उसने जान-बूझकर अंधेरा कर रखा था—जाने क्यों उसे अंधेरा अच्छा लगता था । वह औंधी लेट गई और खिड़की से बाहर देखने लगी जहां आसमान पर



तारों का जाल बिछा हुआ था—ऐसे लगता था जैसे तारे डबडबाए आंसुओं के समान रात की पलकों पर आ ठहरे हों—पद्मिनी के कानों में सेठ साहब के वाक्य गूंज रहे थे—

'बेटी तो पराई अमानत होती है—एक न एक दिन—तो उसे अपने पति के घर जाना ही पड़ता है ?'

'बेटी तो पराई अमानत होती है ।'

पद्मिनी ने बेचैनी से सोचा ।

'अगर डैडी ने सचमुच मेरी शादी कर दी तो क्या होगा ?'

'तो क्या मुझे···मुझे किसी और की पत्नी बनना पड़ेगा ?'

'नहीं नहीं···पद्मिनी हड़बड़ा कर उठ कर बैठ गई, 'यह नहीं हो सकता···यह कभी नहीं हो सकता ।'

फिर पद्मिनी की आंखों में एक लड़के की सूरत घूम गई···एक नटखट चंचल लड़का जो अभी-अभी आम पर चढ़ा उसके लिए केरियाँ तोड़कर उसे दे रहा था···कभी मास्टर जी की टोपी में मेंढ़क रख रहा है ···कभी गुलेल चला-चला कर पद्मिनी को डाकुओं से बचा रहा है, पद्मिनी ने अचानक झुरझुरी-सी ली—फिर उसने देखा वह लड़का मुन्नी से नाराज बैठा गुलेल छील रहा है···मुन्नी उसकी चापलूसी कर रही है, लेकिन वह मुन्नी की ओर नजरें उठाकर नहीं देखता···और फिर···फिर उसने अपनी कलाई पर अपने दांत गाड़ दिए हैं ।

'नहीं, नही नहीं अविनाश···भगवान के लिए नहीं ।' पद्मिनी हड़बड़ा कर स्वयं बोल उठी ।

वह पागलों की तरह चौंककर इधर-उधर देखने लगी । एकाएक उसे ऐसा लगा जैसे सब कुछ खाली-खाली-सा हो गया हो और उसकी आंखें भीग गई···उसकी कल्पना में वह दृश्य उभर आया जब उसने आखिरी बार अविनाश को देखा था···अविनाश अपनी मां दुलारी के साथ गाड़ी में बैठा गांव से जा रहा था और मुन्नी उसके पीछे दौड़ती हुई चिल्ला रही थी···फिर मुन्नी का हाथ उसके पिता ने पकड़ लिया था और धीरे-धीरे अविनाश उसकी नजरों से ओझल होता चला गया था—वह ऐसा ओझल हुआ कि आज तक उसने अविनाश को नहीं देखा था—बचपन के उस साथी की याद उसके दिल में ऐसी जड़ पकड़ गई थी कि उसे लगता था जैसे इस दुनिया में वह केवल अविनाश ही के लिए जन्म लेकर आई है···शायद उसी के लिए भगवान ने उसका बाल विवाह स्वीकार नहीं किया था···फेरों के चंद घंटों बाद ही भगवान ने उसके पति को सदा के लिए उससे छीन लिया था···उसे विधवा बना दिया था···और शायद उसे अविनाश के लिए ही जिन्दा रखा था ।

'अविनाश ! तुम कहां होगे···? अविनाश ।'

पद्मिनी भर्राई हुई आवाज में बड़बड़ाई और फिर तकिए में मुंह छुपाकर धीरे-धीरे सिसकियां भरने लगी ।

पद्मिनी की छोटी-सी अण्डे के समान सुन्दर सफेद रंग की बाक्स वैगन गाड़ी लहराती हुई कालिज के फाटक में दाखिल हुई तो उसके सारे साथी लड़के-लड़कियां उसकी ओर आकर्षित हो गए और जैसे ही पद्मिनी कार से उतरी सबने उसे चारों ओर से घेर लिया ।

'अरे पद्मिनी, यह तू आज किसकी गाड़ी में आई है ?'

'और किसकी ? मेरी अपनी है ।'

'अच्छा···तो तेरे डैडी ने तुझे अलग ले दी है ?'

'हां···यह तो कुछ दिन के लिए है—डैडी ने कहा है हाथ साफ कर लो—ड्राइविंग में भली-भांति परफैक्ट हो जाओ तो फिर कैडलाक या लिंकन मंगवा देंगे—।'

'अच्छा !!' कई आंखें आश्चर्य से फैल गईं ।

'और क्या—मेरे डैडी मम्मी मुझ से बहुत प्यार करते हैं ।'

'लेकिन तेरा हाथ सचमुच अभी साफ नहीं है ।'

'ऐ लो—अभी चार दिन भी गाड़ी सीखे हुए नहीं, भला हाथ कहाँ से साफ हो जायेगा ?'

'अच्छा पद्मिनी—' एक लड़की ने कहा, 'छुट्टी होने पर मुझे अपनी गाड़ी में ले चलेगी ?'

'हां—हां—क्यों नहीं···? चलना ।'

'मुझे भी ले चलना—मुझे ले चलना ।'

'मुझे भी—।'

पद्मिनी ने सबको साथ ले जाने का वचन दे दिया ।

कालिज की छुट्टी हुई और पद्मिनी की कार फाटक से निकलकर सड़क पर लहराती हुई दौड़ने लगी । छोटी-सी कार में सात-आठ लड़कियां भर गई थीं—इतना भी स्थान नहीं था कि कोई हिल-जुल भी सके—गाड़ी लहरें लेती हुई कभी फुटपाथ पर चढ़ते-चढ़ते बचती और कभी राह चलते आदमियों को चीखें मारकर दाएं-बाएं होकर अपने प्राण बचाने पड़ते—बीच में बैठी लड़कियां घबराकर चिल्लाए जा रही थीं—।

'अरे क्या करती है ?'

'देखकर चला ।'

'अरे अरे···बेचारा जवान आदमी है···मर जाएगा ।'

'अरे अरे···कहीं उसका ठेला मत उलट देना ।'

'तुम लोग चुप नहीं बैठोगी ?' पद्मिनी ने गुस्से में कहा, 'क्यों मेरा ध्यान ड्राइविंग से हटाती हो ?'

'तुम भी तो ठीक तरह नहीं चलातीं ?'

'तुम लोग स्थान भी तो दो जरा-सा स्टेयरिंग घुमाना तक कठिन हो रहा है ।'

'अरे···अरे···बचा···बचा···।'

एकाएक सब लड़कियां एक साथ चिल्लाईं और एक नौजवान को बचाते-बचाते गाड़ी फुटपाथ पर चढ़ गई । पद्मिनी ने फुर्ती से ब्रेक लगाए···गाड़ी एक झटके से रुक गई । लड़कियों की चीखें गूंजी और नौजवान राहगीर उछल कर दूर जा खड़ा हुआ···वह गिरते-गिरते बचा था···उसके हाथ में एक गठड़ी थी और दो-तीन पैकिट थे···वह सब गिर गए थे ।

पद्मिनी ने खिड़की में से गर्दन निकाल कर गुस्से से कहा—'अंधे हो क्या ? देखकर नहीं चलते ?'



नौजवान ने आश्चर्य से पद्मिनी और लड़कियों की भीड़ को देखा, संतोष से नाक खुजाई और सामान वहीं रखकर कार के पास आकर बोला—

'आपने मुझसे कुछ कहा ?'

'मैं पूछती हूं, अंधे हो क्या ?' पद्मिनी ने गुस्से मे कहा, अभी एक्सीडेंट हो जाता तो क्या होता ?'

'मेरी टांग या हाथ पैर टूट जाते और मेरी बूढ़ी मां बेसहारा रह जाती—भगवान जाने कौन से जन्म का पुण्य काम आ गया···वरना आपने तो मार डालने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी ।'

'अच्छा···।' पद्मिनी आंखें निकालकर बोली, 'उल्टा चोर कोतवाल को डांटे···स्वयं तो देखकर नहीं चलते और दोष मुझ पर धर रहे हो ?'

'देवी जी···।' नौजवान ने बिना किसी उत्तेजना के कहा, 'भगवान ने मुझे आंखें दी हैं···अगर मुझे मालूम होता कि आंखों की जरूरत पीछे की ओर भी है तो सिर के पीछे भी दो आंखें लगवा लाता—आपको तो भगवान ने जो आंखें दी हैं वह आगे हैं और मैं आपके पीछे नहीं आगे चल रहा था । क्या आपको दिन में कम दिखाई देता है जो इतना बड़ा हट्टाकट्टा आदमी चलता हुआ दिखाई नहीं दिया···?'

'चोरी और इस पर सीनाजोरी ?'

'बहुत सुन्दर···! यह मेरी चोरी है ? क्या आपने फुटपाथ पर गाड़ी चलाने का लायसेंस लिया है ?'

'व्हाट ? गाड़ी फुटपाथ पर चला करती है ?'

'वही तो मैं पूछ रहा हूं, जरा अपनी गाड़ी की पोजीशन देखिए···मैं कहाँ चल रहा हूं और आप गाड़ी कहाँ चला रही हैं ।'

'अच्छा बस···अधिक बक-बक मत करो ।'

'अरे देवी जी···क्या आपने मुझे कोई मूर्ख गंवार समझ रखा है···मेरे ही प्राण लेने के चक्कर में थीं और मुझे ही आंखें दिखा रही हैं—जरा अपना लाइसेंस तो दिखाइये निकालकर वरना बुलाता हूं पुलिस को ।'

'वह—वह—' एक लड़की बोली, देखिए भाई साहब—भूल हो गई—क्षमा कर दीजिए—।'

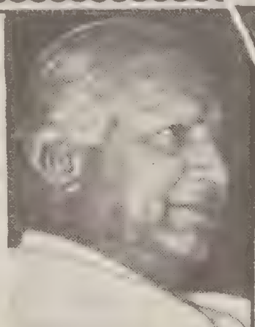
'जाओ—क्षमा कर दिया—।' नौजवान ने बड़ी शान से कहा, 'लेकिन अपनी मेम साहब से कहिए कि गाड़ी मेन रोड पर चलाया करें···।'

यह कहकर नौजवान ने आगे बढ़कर अपनी गठरी और सामान उठाया और चला गया···पद्मिनी मुंह ही मुंह में बड़बड़ाकर उसे बुरा-भला कहती रही । एक लड़की ने

दीवाना चुनाव प्राइमर

—मध्यावधि चुनावों के क ख ग से परिचित कराने के लिए दीवाना विशेष प्राइमर तैयार किया है। पढ़िये और दाद दीजिए।

अ से

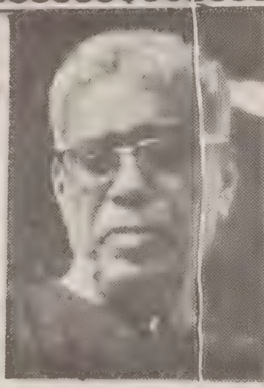


देवराज अर्स

अर्स

जिनके मुंह में पाइप और पीछे हाथ धोकर कांग्रेस आई लगी है।

आ से



देवरस

आर.एस.एस.

जिसकी सदा मिट्टी पलीद करते हैं।

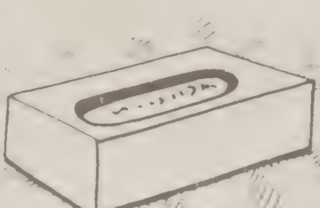
इ से



इन्दिरा

जिनके आने से सब ठंडे हो गये।

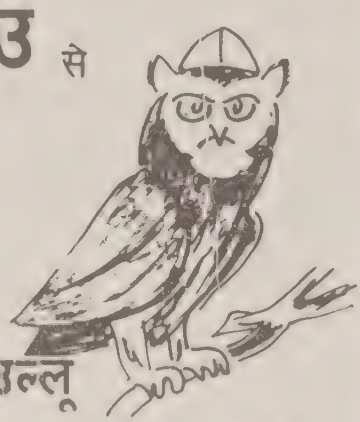
ई से



ईंट

जो विरोधियों पर फेंकने के काम आती है।

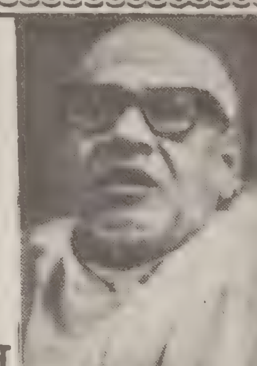
उ से



उल्लू

जो जनता को नेता बनाते हैं।

ऊ से



ऊलजलूल

जो राजनारायण बकते हैं।

ए से



रामचन्द्रन

ए.डी.एम.के

जो फिल्मी स्टाइल से राजनीति चलाते हैं।

ऐ से



ऐडी

जिसे उम्मीदवार वोटरों के घर रगड़ते हैं।

ओ से



ओले

जो सिर मुंडाते ही चरण सिंह के सिर पड़(आगमन में)।

फैण्टम — जंगल शहर



पुलिस वालों का ख्याल है रहस्यमय नकाबपोश मेरा बैज ढूंढ़ रहा है •••ओह •••
FALK & BARRY 11/13
जल्दी वापस लो।
कृपया धूम्रपान न करें।
शुक्रिया
डेव, मैं सोचता हूं जो पुलिस का ख्याल है वो ही उस लुटेरे का भी होगा जिसने बैज चुराया है और वो जल्द ही मुझ से टकराएगा।
कल •••लुटेरे
कल रात भी पार्क में कोई लूटपाट नहीं हुई। क्या हम रहस्यमय नकाबपोश को इसके लिए शुक्रिया कर सकते हैं•••
वो न जाने वास्तविक• है या काल्पनिक••• लेकिन उसने लुटेरों को जरूर डरा दिया।
सुना इसको, हमको धमका रहे हैं!
हमें क्यों? नकाबपोश तुम्हारे व बैज की तलाश में है मॉक्स!
हां
घूंसा!
!!
मॉक्स तुम और नकाबपोश बैज के लिए आपस में ही क्यों नहीं भिड़ते।
मॉक्स! मैंने तो मजाक में राय दी थी।
ये कोई मजाक है? और किसी ने अपनी राय देनी है।
किस-किस को माल हाथ लगा है•••किसी को नहीं•••! गैंग के सब आदमियों को बुलाओ!
मेरे पास एक स्कीम है।
कल•••स्कीम। कल सब बदमाशों की सभा।
पार्क हमारा क्षेत्र था, आसानी से लूटपाट करते थे मगर नकाबपोश ने रंग में भंग कर दिया हमें उससे बदला लेना है।
मॉक्स हम उसे कैसे ढूंढ़ेंगे।
मैंने कहा न मेरे पास बढ़िया स्कीम है।
जिन्जर बेबी!
तुम मेरी प्रेमिका को जानते हो यही स्कीम है।
???



दीवाना
वर्ग पहेली
15 रुपये पुरस्कार जीतिये

1	2		3	4
		■	5	
6	7	■		
■	8	9	■	
10				■

अन्तिम तिथि :२फरवरी१६८०

संकेत

बायें से दायें

१. दो तर के बीच में बत्तख का सिर रखा जाये तो खूब गीला हो जायेगा । (५)
५. बे सिर की सलामी । (२)
६. चार पुराने ग्रन्थ । (२)
८. उल्टे ताले प्राप्त करता ? (२)
१०. जहां पहला हॉकी विश्व कप हुआ था तथा जहां हरिजनों को दी गई जमीन के विरुद्ध आन्दोलन हो रहा है इन दोनों जगहों के बाद वाले आधे भाग मिल एक सुहानी जगह का पता बताते हैं । (४)

ऊपर से नीचे

१. जो यहां नहीं हैं उनको फ्राई करके चमचों को चाटने के लिए दिया जा सकता है ? (३)
२. सबूत के लिए, किसी को कुछ देने पर क्या करना जरूरी है ? (३,२)
३. इसे लेने पर मियां बीबी अलग हो जाते हैं । (३)
४. हैदराबाद की एक मुस्लिम महिला जो कुछ महीने पूर्व समाचारों और दंगों का कारण बनी । (३,१)
६. इसे खाने पर गुस्सा आता है ? (२)

हा हा हा

● एक दल बदलू अपनी बीबी के साथ जंगल से होकर जा रहा था, इतने में डाकुओं ने हमला बोल दिया । डाकू तीन थे । दल बदलू भी डाकुओं के दल में शामिल हो गया और अपनी बीबी के लूटे जेवरों में से अपना चौथा हिस्सा लेकर वापिस आ गया ।

● एक बूढ़ी औरत सुपरसोनिक जहाज में पहली बार सफर कर रही थी । औरत ने अपने बेटे से पूछा कि सुपरसोनिक क्या होता है । बेटे ने समझाने की कोशिश की, "मां सुपरसोनिक का मतलब है आवाज़ की गति से तेज उड़ने वाला । जितनी देर में यह आवाज़ एक जगह से दूसरी जगह पहुंचती है यह उससे भी जल्दी पहुंच सकता है ।

बुढ़िया ने पायलट से प्रार्थना की, "बेटा, जहाज आवाज की गति से मत चलाना । रास्ते में मैं अपनी बहू से बातें करना चाहती हूं ।"

● शेखचिल्ली ने अपनी गाय को नींबू खिलाना शुरू किया। किसी ने इसका कारण पूछा तो बोले, "मैं दूध पीते तंग आ गया हूं पनीर खाना चाहता हूं ।"

क्यों और कैसे

प्र० : बर्फीले प्रदेशों में रहने के लिए बर्फ का घर 'ईगलू' कैसे बनाया जाता है तथा यह पिघलता क्यों नहीं है ?

उ० : बर्फीले प्रदेशों के एस्कीमों लोगों में भी पत्थर तथा लकड़ी के मकान बनाने का काफी चलन हो गया है फिर भी यात्रा के दौरान तथा विशेष अवसरों पर ये बर्फ के घर 'ईगलू' ही बनाते हैं। इन ईगलुओं में कई विषेशताएं होती हैं।इनमें मुख्य है कि ये बहुत बनाये जा सकते हैं। साथ-साथ ये हर प्रकार के मौसम का सामना भी बखूबी कर लेते हैं। ईगलू बनाने के लिए सबसे पहले नई बर्फ में ५ फुट लम्बी तथा २० इंच गहरी खाई बनाई जाती है। फिर इस खाई के मुंह के पास से चाकू की सहायता से बर्फ के टुकड़े काटे जाते हैं। इन टुकड़ों को ऐसे ढंग से काटा जाता है कि रखने पर ये भीतर को झुकते हैं। इन टुकड़ों को ऐक गोलाकार ढंग से सजाया जाता है तथा दीवार को ऊपर उठाते हुए इस गोल को छोटा करते जाते हैं। दीवार बनाने के लिए ईगलू बनाने वाला बर्फ इसके भीतर से ही लेता जाता है। अंत में छत बनाने का मूल पत्थर रक्खा जाता है। ये पत्थर बाहरी किनारों से बड़ा और भीतरी किनारों से छोटा बनाया जाता है। छत बनने के बाद ईगलू की सब दरारें नर्म बर्फ से भर दी जाती हैं। इस प्रकार का एक छोटा ईगलू लगभग दो घंटे में बनकर तैयार हो जाता है।

जब ईगलू घर बन जाता है तो मजबूत बनाने का काम स्त्री अपने हाथ में ले लेती है। वे अपने चरबी से जलने लैम्प को अत्यधिक तेजी से इसके भीतर जला कर इसका दरवाजा बिलकुल कसकर बन्द कर देती हैं। अब ईगलू के भीतर बर्फ पिघलने लगती है, परन्तु गोलाकार छत होने के कारण पानी टपकता नहीं बल्कि पिघलकर दीवार के बर्फ के पत्थरों में भर जाता है जिससे ये पत्थर पूरी तरह गीले हो जाते हैं तो गृहिणी दरवाजा खोलकर लैम्प बुझा देती हैं। बाहर की ठंडी बर्फीली हवा इसमें तुरन्त घुस के कुछ ही मिनटों में ईगलू की दीवारों को ठोस पत्थर के समान जमा देती हैं। कुछ देर में बनाया गया बर्फ का घरौंदा बर्फ के पत्थरों के मजबूत घर में बदल जाता है। ईगलू की मजबूती का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि बर्फ में रहने वाले पोलर भालू जैसा भारी जानवर भी इसकी छत पर से गुजर जाये, तो भी इस घर का कुछ नहीं बिगड़ता। ये घर मजबूत, पक्का तथा भीतर से गर्म और आरामदेह होता है। ऋतु परिवर्तन होने पर ईगलू पिघल जाते हैं ऐसे में सबसे पहले इसकी छत का पत्थर ही पिघल कर गिरता है।

प्र० : हमारी आंतें कितनी लम्बी होती हैं तथा ये भोजन पचाने का कार्य कैसे करती हैं ?

उ० : आंतों की लम्बाई तथा इनके कार्य के बारे में अधिकतर लोगों का एक धुंधला सा अनुमान है कि शरीर के भीतर आंतों के गुच्छे के गुच्छे होते हैं जिन से हो कर भोजन पाचन क्रिया के लिए जाता है। परन्तु इनके वास्तविक रूप तथा कार्य के बारे में बहुत कम लोगों को सही पता है।

जानवरों में बड़ी आंतों की लम्बाई उनके भोजन की किस्म पर निर्भर होती है। मांसाहारी पशु की आंतें कम लम्बी होती हैं क्योंकि इस भोजन को पचाने के लिए कम काम की जरूरत होती है, क्योंकि इस भोजन में पहले ही पाचन क्रिया का काफी काम हुआ होता है। शाकाहारी लोगों की आंतें मांसाहारी लोगों से अधिक मानी जाती हैं।



मनुष्यों की आंतें लगभग १० फुट लम्बी होती हैं, परन्तु मरने के बाद इन आंतों का लचीलापन खत्म हो जाता है और इन्हें खीच कर २४ फुट नापा जा सकता है। आंतों की दीवार अधिकतर मांस-रेशों से बनी होती हैं ताकि वो अपने भीतर से गुजरने वाले भोजन पर कार्य कर सकें। आंतें भोजन में कुछ स्रवण मिला कर उसे आगे भेज देती हैं। ये कार्य करने के लिए छोटी आंतें बहुत से लूपों से बनी होती हैं। हर लूप थोड़ा सा भोजन ले कर उसे पीस कर लगभग ३० मिनट तक पचाकर उसे दूसरे लूप में भेज देता है। इस कार्य में सहायता करने के लिए छोटी आंतों की दीवारों में लगभग २०,०००,००० छोटी छोटी ग्रन्थियां होती हैं। ये ग्रंथियां पाँच से दस क्वार्ट के करीब पाचन स्रव आंतों में डालती हैं। ये स्राव भोजन को भिगोकर नरम कर देते हैं और बड़ी आंतों में जाने के समय भोजन आधा तरल होकर पहुचता है।

यदि आंतों की दीवार को आवर्धक लेंस से देखा जाए तो पता चलता है कि ये चिकनी न हो कर मखमल के समान छोटे-छोटे रोंये से बनी हैं। ये रोंये लाखों नन्हें स्पर्शिका होते हैं, इन स्पर्शिकाओं द्वारा ही ग्रन्थियों को ठीक समय पर पाचन तत्व डालने का आदेश दिया जाता है तथा ये स्वयं भी पाचन क्रिया में सहायता करती हैं।

जो भोजन छोटी आंतों की पाचनक्रिया द्वारा पचता नहीं है वो बड़ी आंतों में जाकर वहाँ रहने वाले बैक्टीरिया की सहायता से पचाया जाता है इसे पूती भवन कहते हैं। अरबों की संख्या में मौजूद बैक्टीरिया हमारे भोजन के सख्त हिस्से जैसे फलों के छिलके इत्यादि को अलग-अलग करके उनमें से शरीर के लिए उपयोगी तत्व निकाल लेते हैं। हमारी आंतों के कार्य करने का ये सब एक धुंधला सा ही अनुमान है। आंतें हमारे शरीर की एक बहुत ही अद्भुत अंग हैं जो बहुत ही होशियारी तथा सुव्यवस्थित ढंग से हमारे खाये हुए भिन्न-भिन्न प्रकार के भोजन को हमारे शरीर के उपयोग के अनुकूल तैयार करती हैं।

प्र० : अन्तरिक्ष में जाने वाले यात्री अन्तरिक्ष में हवा तथा किसी प्रकार के भी आकर्षण के अभाव में कैसे चलते हैं ?

उ० : अन्तरिक्ष में खोज करने वाले यात्रियों के खोजों के अन्तर्गत बहुत बार इन यात्रियों के अन्तरिक्ष में चलने के बारे में सुना गया है, परन्तु आश्चर्य की बात है कि वायु तथा आकर्षण शक्ति के अभाव में ये कैसे सम्भव है।

यदि अन्तरिक्ष यात्री किसी कारणवश अपने यान को छोड़कर बाहर निकलता है तो वो साधारण रूप से नहीं चल सकता क्योंकि अन्तरिक्ष में खाली स्थान के अतिरिक्त बिल्कुल कुछ नहीं है, यहां तक की मनुष्य को किसी भी ओर खींचने के लिए किसी भी प्रकार की आकर्षण शक्ति तक नहीं है। अन्तरिक्ष में चलने के लिए मनुष्य को भी अपने को अपने यान के समान ही इधर-उधर ले जाना पड़ता है और ये कार्य राकेट की सहायता से किया जाता है। इसलिये जब ये यात्री किसी विशेष कार्य जैसे दो यानों को जोड़ने में सहायता करने इत्यादि के लिए बाहर निकलते हैं तो ये अपने साथ विशेष प्रकार के हाथ से चलने वाले राकेट लेकर निकलते हैं। जब ये रोकेट के ऐगजा-हस्ट को एक दिशा में चलाते हैं तो ये दूसरी दिशा में उसके धक्के की सहायता से अग्रसर होते हैं और इस प्रकार ये मनचाही दिशा में बढ़ते हैं।

क्यों और कैसे
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२


सिलबिल पिलपिल,
कविता का अपहरण
भाग-२
पिछले अंक में आपने पढ़ा कि सिलबिल और गरीबचन्द चाँदनीरात को सैर करने बाहर निकलते हैं। सिलबिल कविता कहना चाहता है। गरीब चन्द काफी समझाने की कोशिश करता है कि कविता क्या होती है? लेकिन सिलबिल के भेजे में पूरी तरह बात नहीं आती। कविता कविता रटता घर जा रहा होता है कि कविता नाम की एक लड़की का भाई उसे कविता का प्रेमी समझ पीट देता है। गरीबचन्द के उकसाने पर सिलबिल बदला लेने के लिए कविता का अपहरण करने की योजना बनाता है उससे आगे—
उस जालिम को पीटने का मजा चखना ही होगा। उसने बे-वजह एक बे-गुनाह को पीट दिया। अब आर्य समाज मन्दिर में मैं कविता के साथ सात फेरे लेकर ही रहूँगा। यह म्हारी इज्जत का सवाल है। गाम में म्हारी भेंस को भी कोई डंडा लेकर पीट दे तो भी हम उसका बदला ले लेते हैं। भेंस किसान की आबरू है।
तू भी यही समझले कि उसने तुझे नहीं तेरी भेंस को पीट दिया है। उसने तेरे सिर में मुक्का मारा, डंडा जड़ दिया। तेरी खोपड़ी में भी तो एक भेंस ही रहती है। कहावत है अक्ल बड़ी या भेंस? तेरी खोपड़ी में अक्ल तो है नहीं इसलिए जरूर उसमें कोरी भेंस ही रहती होगी। अपनी भेंस की इज्जत के कारण तू अमिताभ बच्चन बन जा।
हम यह बोरी लेकर जायेंगे। कविता को इसी बोरी में बन्द करके ले आयेंगे।
कविता को मैं आलू की बोरी में बन्द करके लाऊंगा? आखिर वह मेरी होने वाली बीबी होगी! उसके साथ मैं ऐसा कैसे कर सकता हूं। उसके लिए तो रेशम की थैली होनी चाहिए जिसके बार्डर पर मीनाकारी का काम हो। आलू की बोरी!
तू आदमी है या कचालू का छिलका? बेवकूफ, आलू और प्रेम में बहुत निकट का सम्बन्ध है। प्रेम के लिए एक लड़की का होना बहुत जरूरी है। और लड़की आलू के बिना नहीं रह सकती। उसे आलू-छोले खाने हैं, आलू की टिकिया खानी होती है। आलू दुनिया में हर जगह पाया जाता है। उसी तरह प्रेम का रोग भी दुनिया में हर जगह मिलता है। आलू और प्रेम दोनों ट्रायंगल कांगरूमेंट हुए।

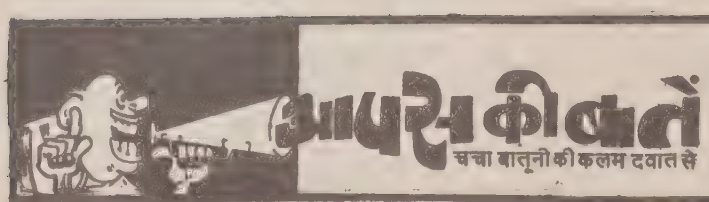


आज दो कलयुग के प्रेम के सिपाही प्रेम की लड़ाई लड़ने निकले हैं। प्रेम की लड़ाई में लाखों सिर कट गये। हजारों तबाह हो गये। भाखड़ा डैम में जितना पानी है उतना आसुओं का सागर बना होगा। लाखों क्यूसैक खून बह गया।
बड़ी कठन है डगर पनघट की, क्या भर लाऊं जमना से मटकी ?
लाखों निबें प्रेम लिखते लिखते घिस गयीं। हजारों लीटर स्याही काम आई। प्रेमियों की बात-चीत में करोड़ों टेलीफोनों का बिल लाखों रुपयों में चढ़ गया। मैं तुझे यह सब प्रेम आंकड़े इसलिए सुना रहा हूं ताकि तेरा दिल छोटा न हो। प्रेम में अपहरण भी चलता है। एवरी थिंग इज फेयर इन लव एंड वार।
हमें किधर जाना है। किस कालोनी में है उसका घर ?
मुझे क्या पता ? मैं उसे जानता थोड़े ही हूं।
तुझे ही उसके घर का पता नहीं है तो और किसको होगा? उसका पता ही नहीं है तो अपहरण कैसे होगा ? तुझे तो पता होना चाहिए था।
ऐ हाँ।
PUM
जब उसके भाई ने तेरी पिटाई की थी तो तुझे चांद तारे नजर आये थे। आये थे कि नहीं ?
जब तुझे अरबों मील दूर के तारे नजर आ गये थे तो क्या उसके घर का नम्बर और मुहल्ला नजर नहीं आया ?
खैर अभी घबराने की कोई बात नहीं है। अभी हमारे तरकस में बहुत से तीर बाकी हैं। हम तंत्र विद्या का प्रयोग भी कर सकते हैं। देश का सबसे बढ़िया तांत्रिक हमारे पास है। उससे हम जादू टोना करवायेंगे। कविता अपने आप हमारे घर चली आयेगी। सबसे बढ़िया तांत्रिक राजनारायण के पास है। उसे रेलवे का गोल्डन पास मिला हुआ है। हमें उसी तांत्रिक की मदद लेनी पड़ेगी।
वह तांत्रिक सच ही करेगा कुछ ?


करेगा क्यों नहीं,उसी तांत्रिक की मदद से तो राजनारायण ने इंदिरा गांधी ग्रौर मोरारजी की सरकारें गिरायीं। तांत्रिक शक्ति में बड़ी ताकत है। उसी तांत्रिक की मदद से राजनारायण की पार्टी चुनाव में पांच सौ में से छः सौ सीटें जीतने वाली है। राजनारायण थमको इन्कार भी नहीं कर सकता
इन्कार तो नहीं कर सकता क्योंकि राजनारायण किसानों के नेता हैं ग्रौर हम किसान सम्मेलन के ग्रादमी हैं। ग्रौर चुनाव भी नजदीक ग्रा ही गये हैं। हमको नाराज थोड़े ही करेगा। मैं ग्राज ही राजनारायण की कोठी पर जाकर उस तांत्रिक को पकड़ता हूँ ग्रौर उससे तंत्र विद्या का टोना पूछ कर ग्राऊंगा। कविता मेरी है ग्रौर मेरी रहेगी।
चूहे उस तांत्रिक ने तो बड़ा ग्रजीब टोटका बताया। कहता है कि कच्चा घड़ा लेना, उसमें सरसों का तेल डालना। फिर ग्रपनी मूंछ का एक बाल ग्रौर एक कुग्रांरी लड़की के हाथ की बनी जौ की रोटी उसमें डालना। बाकी चीजें जो डालनी हैं उसकी लिस्ट लम्बी है। छिपकली की पूंछ, मकड़ा, बिच्छू, नौ महीने का सांप, काले घोड़े का खुर, एनासिन की दो गोलियां, बैटरी के पुराने सैल, मुर्गे का सिर, कव्वे की टांग, और···ग्रौर······
ग्रौर नमक जीरा ग्रौर लाल मिर्चें भी तो डालनी पड़ेंगी। भाई मुझे तो यह तांत्रिक टोटका नहीं सौरंगा ग्रचार बनाने का तरीका लगता है। चलो प्रेम की लड़ाई में हम इसे भी परांठों के साथ खायेंगे।
नेता जो राजनरैन
क्या सचमुए हमें यही टोटका करना पड़ेगा ?
करना क्यों नहीं है ? जब प्रेम की डगर पर चल पड़े तो सांप ग्रौर बिच्छुग्रों का क्या डर ? ग्रगर हमने यहाँ पीठ दिखा दी तो मुहब्बत का नाम मुर्दाबाद हो जायेगा। मुहब्बत को जिन्दाबाद रखना है
बस कमर कस ले। टोना करने के बाद हनीमून पर जाने की तैयारी कर ले। गुर्गाबी की जूतियां खरीद और तीन चार रेशम के स्लीपिंग सूट बनबा ले। श्री नगर पैलेस होटल में कमरा बुक करा ले।
ग्रच्छा याड़ी, चलो यह भी कर लेते हैं। टोने के लिए हमको काले लबादे भी सिलवाने पड़ेंगे ग्रौर यह सारे जनावर इकट्ठे करने पड़ेंगे। म्हारे पास टाइम कम है काम जादा है। प्रेम परीक्षा सिर पर ग्रा गई है रात दिन मेहनत करना है।



मिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िए ।



अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें

मुकेश भटनागर, किला, चित्तौड़गढ़ : डीयर अंकल, पढ़ाई में मेरा मन बिल्कुल नहीं लगता। बताइए क्या करूं ?

उ० : मन को समझाइए कि पढ़ाई बिना आप अंगूठा छाप रह जायेंगे और आने वाले दिनों में दुनिया वाले आपको हर बात पर अंगूठा दिखायेंगे।

चन्द्रप्रकाश, पालमपुरी : हिन्दुस्तान में पिटे आशिक और घिसे जूते का ठिकाना कहां होता है ?

उ० : फिलिमस्तान में। आज फिल्मों में आशिक बनने वाला कोई हीरो ऐसा नहीं जिसने सड़कों पर घिसकर कई जोड़ी जूते न तोड़े हों।

अशोक जोहर 'गगन' देहरादून : अंकल जी क्या आप बता सकते हैं कि कौन से नेता को बना कर भगवान ने गलती की है ?

उ० : प्यारे भतीजे जी, क्या आप बता सकते हैं कि कौन से नेता को बना कर भगवान ने गलती नहीं की है ?

प्रेमसागर ग्रोवर, करनाल : आप दीवाना के पाठकों में ही मस्त रहते हैं या चाची की भी कुछ खैर खबर रखते हैं ?

उ० : उनसे हर समय खबरदार रहते हैं।

हरीशंकर आजाद, शाहजहांपुर : चाचा जी, आप दिन में कितनी बार झूठ बोलते हैं ?

उ० : जितनी बार सच बोलने की कोशिश करते हैं।

तेजपाल सिंह, अलवर : बातूनी होने के हिसाब से आप आगे हैं या चाची जी ?

उ० : हमारा आगा पीछा तो आप जानते ही हैं। चाची के बारे में हम आपको इतना बता दें कि कल वह अपना इलाज कराने डाक्टर के पास गयीं तो पांच मिनट तक जुबान बाहर निकाले रहने के बाद बोलीं, 'मैं कितनी देर से जुबान बाहर निकाले बैठी हूं। आप ने देखी ही नहीं।'' इस पर डाक्टर ने उत्तर दिया। ''बस अब आप जुबान अन्दर कर लीजिए। मैंने आराम से नुस्खा लिखना था, सो लिख लिया।''

बलबन्त सिंह बिष्ट, पिथौड़ागढ़ : चाचाजी क्या शराब पीना बुरी बात है ?

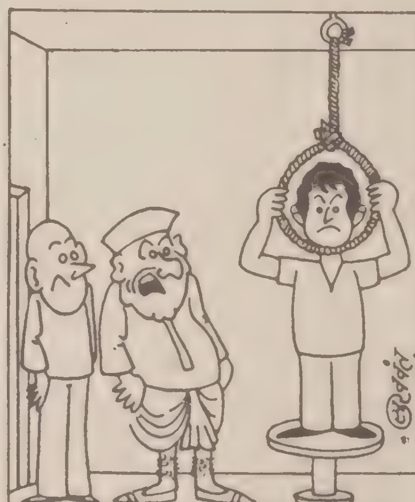
उ० : सेहत के लिए बुरी बात है, यह तो बोतल पर लिखा होता है। दूसरी मजेदार बुराई यह है कि एक बार एक शराबी के ड्राईवर ने कहा, साहब पैट्रोल समाप्त हो गया। गाड़ी आगे नहीं जा सकती। शराबी साहब ने उत्तर दिया, कोई बात नहीं, आगे नहीं जा सकती तो वापस ले चलो।

अशोक जोहर, 'गगन', देहरादून : नेताजी की आखरी इच्छा क्या होती है ?

उ० : यही, कि लोगों की आंखों में धूल झोंक कर किसी भी तरह प्रधानमन्त्री बन जायें।

नरेश कुमार गुलाटी, तिलक नगर : यह जानते हुए भी कि एक दिन सब को मरना है, मनुष्य मौत से क्यों डरता है ?

उ० : क्योंकि उसे पता नहीं होता कि मर कर जीने और वास्तव में मरने में कितना अन्तर होता है।



"ओह! यही तो कमी है अपने देश में जरा दस साल नौकरी नहीं मिली तो चल दिए आत्महत्या करने को"।

चन्द्रशेखर गोस्वामी, हरिद्वार : चाचा जी, क्या आपने कभी दिन में तारे देखें हैं ?

उ० : कभी इलेक्शन में खड़े नहीं हुए इस लिए कभी ऐसी नौबत नहीं आई। सुना है आपके हमनाम जनता पार्टी के अध्यक्ष चन्द्रशेखर को आजकल रात में सूरत और दिन में तारे दिखाई दे रहे हैं।

रामलाल शर्मा, गुड़गावां : आप की बातों से मैं हंसते-हंसते बेहाल हो जाता हूं।

उ० : हमारी तो बातें ही ऐसी होती हैं कि गधे को भी हंसी आ जाती है। फिर आप का तो हंसते-हंसते बुरा हाल हो ही जाता होगा।

पवन गुप्ता, ग्वालियर : आदमी घमंडी कब हो जाता है ?

उ० : जब वह दीवाना नहीं रहता और अपनी औकात भूल जाता है।

गुरुभेज सिंह, झरिया : मैं अपने जीवन में एक नई किरण लाना चाहता हूं, क्या करूं ?

उ० : जनता पार्टी में शामिल हो जाइए और वहां जयप्रकाश नारायण की बुझी हुई किरणों में से कोई चमकती हुई बची हो तो ले आइये। इसके अतिरिक्त तो कहीं से एक बोतल मिट्टी का तेल नहीं मिलता, नई किरण कहां से मिलेगी ?

दीपक कुमार चौरसिया, बेगुसराय : अंकल जी, विवाह में कन्या का ही दान किया जाता है, वर का दान क्यों नहीं किया जाता ?

उ० : क्योंकि यह भगवान का वरदान है कि वर तो उस समय "चूहेदान" में फंसा होता है।

हरविन्दर सिंह खनूजा, जबलपुर : चाचा जी मुझे लगता है दीवाना में आप दीवानों का कोई आदर नहीं करते। जैसे कई दीवानों का सुझाव है कि अंतिम पृष्ठ पर किसी हीरो या हीरोईन का चित्र देने की बजाये वहां किसी खिलाड़ी का चित्र दिया करें। इस ओर ध्यान न देने का क्या कारण है ?

उ० : उन लोगों की दीवानगी जिन्हें फिल्मी चित्र पसंद हैं। पर अब हम आप का सुझाव स्वीकार करते हुए आपका अनुरोध पूरा करने की ओर ध्यान देंगे।

प्रेम अरोड़ा, पानीपत : चाचा जी, आप कितने दिन बाद अपने सर की हजामत बनवाते हैं ?

उ० : प्रेम अरोड़ा जी, यहां पता नहीं एक दिन में कितनी बार श्रीमती जी से पाला पड़ता है, आप कितने दिन बाद की बात पूछ रहे हैं।

राम अवतार गुप्ता, नई दिल्ली : आप अपने कामों में अपनी श्रीमती जी से कितनी सलाह लेते हैं ?

उ० : बहुत सी बातों में सलाह लेते हैं, पर लाभ कोई नहीं होता, जैसे कल ही हमने उनसे पूछा, "हम अपने एक मित्र के जन्म दिन पर उन्हें उपहार में एक रूमाल देना चाहते हैं। पर सोचते हैं यह उपहार तो छोटा रहेगा। तुम्हारा क्या विचार है ?" श्रीमती जी ने उत्तर दिया, "रूमाल छोटा रहेगा तो लट्ठे का पूरा थान दे दो।"

राजीव कुमार शर्मा, आगरा : राजनारायण जी काम की बातें करते हैं, फिर भी लोग पता नहीं उन्हें क्या-क्या समझते हैं ?

उ० : वे पागल हैं।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२



आदिमानव
तुम आज शिकार करने नहीं चल रहे हो ? तुम्हारे हाथ में हथियार नहीं है ?
नहीं । मेरे पास कल का मारा हिरण अब तक पड़ा है । पहले उसे तो खा लूं ।
तो फिर बाहर क्यों घूम रहे हो ? अपनी गुफा में बैठो, आराम करो ।
कैसे बैठूं गुफा में ? दिन को अन्धेरी गुफा में बैठना अच्छा लगता है ।
अरे ! तुम्हारी गुफा में अब तक अन्धेरा है ? तुम भी लकीर के फकीर ही रहे ?
अब तो जंगल की सारी गुफाओं में लाइट पहुंच चुकी है । बटन दबाते ही भक से सारी गुफा जगमगा जाती है । मैंने भी कल ही अपनी गुफा में फिटिंग करवाई है । सिल्वानीतोरस की कम्पनी से लगवाया है ।
अच्छा ! बटन दबाया और सारी गुफा जगमग ? शिलालेखों में मैंने इसके बारे में पढ़ा तो था लेकिन सोचा वैसे ही गप्प होगी । तुम कहते हो तो बात ठीक ही होगी । साइंस ने आजकल कितनी तरक्की कर ली है । हैरानी में डालने वाली बातें हो रही हैं ।
तुम अभी मेरे साथ चलो और मेरी गुफा देखो ! तुम्हें खुद सचाई का पता लग जायेगा । अपनी आंखों से देख लेना और फिर अपनी गुफा में भी लाईट लगवा लेना ।
देखा ! मैंने यह बटन दबाया और ढक्कन ऊपर उठ गया । नीचे एक चमकदार अबरक का टुकड़ा रखा है । सूरज की रोशनी उस पर पड़ती है और अबरक इस तरह फिट कर रखा है कि सूरज की रोशनी मुड़कर सीधी गुफा में चली जाती है । है न कमाल की बात !
गुफा के अन्दर दिन जैसा उजाला हो गया । इन साइंस दानों के दिमाग का भी जवाब नहीं है । क्या-क्या नये-नये ईजाद करते हैं । मुझे भी अपनी गुफा में लाइटिंग लगवानी ही पड़ेगी ।

जूडो कैराटे कैसे सीखें?

छठा जूडो दाव

यदि कोई व्यक्ति सामने से आकर आपकी गर्दन जकड़ लेता है तो अपने दोनों हाथों से उसकी हथेलियां पकड़ लीजिए। फिर दोनों हाथों की सबसे छोटी उंगलियों की तरफ से पकड़कर छोटी उंगलियों को विपरीत दिशा में मोड़िए। इससे शत्रु की पकड़ ढीली पड़ जायेगी। पकड़ ढीली होते ही आप दोनों साथ के अंगूठों से तो छोटी उंगलियों को मोड़े रखें, साथ ही दोनों हाथों की बाकी चारों उंगलियों को दुश्मन के हाथ की हथेलियों के पीछे जहां उंगलियों की नसें उभरी होती हैं, वहां चारों उंगलियों का दबाव बढ़ाइए। इससे दुश्मन की नसों तथा हाथों के साथ-साथ पूरे शरीर पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा और दुश्मन नीचे बैठने पर मजबूर हो जाएगा। जैसे ही वह नीचे बैठे—आप अपने घुटने का प्रहार उसके मुंह या ठोड़ी पर करें।

सातवां जूडो दाव

मान लीजिए आपका शत्रु सामने से आकर आपकी गर्दन पकड़ लेता है और



आप ऊपर वाला दाव (छठा दाव) लगाने में मजबूर हैं तो ऐसे समय अपने दोनों हाथों की हथेलियों को आपस में कसकर बांध लीजिए और शत्रु के दोनों हाथों के बीच से फुर्ती से निकालते हुए दुश्मन की नाक पर या मुंह पर जैसा भी अवसर मिले कसकर वार कीजिए। दुश्मन चकराकर गिर पड़ेगा।

आठवां जूडो दाव

यदि आपका शत्रु आपकी गर्दन पीछे से आकर हाथों से जकड़ लेता है तो ऐसे में शत्रु के हाथ को अपने एक हाथ से तो उसके हाथ की कलाई थामें और दूसरे हाथ से उसकी कोहनी को पकड़ें फिर उसकी कलाई तो नीचे की ओर खींचें तथा कोहनी को दूसरे हाथ से ऊपर की ओर झटके से ठेलें ऐसी स्थिति में दुश्मन का हाथ मुड़ जाएगा हाथ को उसी दिशा में और अधिक मोड़ते हुए पीठ के पीछे ले आइए। अब दुश्मन आपके काबू में है।

नौवां जूडो दाव

अगर शत्रु सामने से आकर अपने पैर की ठोकर आपके पेट या जांघों के बीच



मारना चाहता है तो आप तुरन्त आगे की ओर झुककर अपने दोनों हाथों को चित्र में दिखाए अनुसार कैंची बनाकर पैर का वार रोकिए। और फिर एक हाथ से शत्रु का पंजा कसकर पकड़िए तथा दूसरे हाथ से पिंडली के नीचे वाला भाग पकड़िए, फिर पंजे को एक ओर जोर से उमेंठ दीजिए। शत्रु उलटकर जमीन पर औंधा गिर पड़ेगा फिर उसके पैर को घुटनों से मोड़कर जकड़े रहिए। शत्रु जमीन से ऊपर नहीं उठ सकेगा, जब तक आप उसका मुड़ा हुआ पैर नहीं छोड़ेंगे।

दसवां जूडो दाव

दुश्मन यदि सामने से आकर आपकी गर्दन पकड़ ले और आप कोई दांव नहीं लगा पा रहे तो ऐसे में आप अपने दोनों हाथों से दुश्मन की भुजायें पकड़ लें। फिर दायीं या बायीं ओर किसी भी एक दिशा में अपने दोनों हाथों से उसे धकेलें। ऐसा करते समय शत्रु जिस ओर को झुकेगा—वह अपना संतुलन बनाने के लिए तुरन्त उसी ओर को



पैर आगे लायेगा। बस, आप मौके का फायदा उठाते हुए अपने उसी दिशा वाले पैर को आगे बढ़ाकर शत्रु के उस आगे बढ़ने वाले पैर के सामने अड़ा दीजिए। शत्रु अपना संतुलन खोकर गिर पड़ेगा।

ग्यारहवां जूडो दाव

यदि शत्रु सामने से आकर आपके बालों को जकड़ ले तो ऐसी स्थिति में फौरन बचाव का उपाय कीजिए। मान लीजिए यदि शत्रु अपने दायें हाथ से आपके बाल जकड़ लेता है तो आप अपने बायें हाथ से उसकी कलाई कसकर पकड़ लें और बायें हाथ को घुमाकर लाते हुए कैराटे चाप का प्रहार उसकी कोहनी के पिछले भाग पर करते हुए वही हाथ नीचे को दबाते जायें। साथ ही दूसरे हाथ से पकड़ी हुई कलाई को भी उसी दिशा में मोड़ते जाएं। शत्रु झुककर आपको आजाद करने लगेगा। क्रमशः

★ एक नेता जी की सर्कस के रिंग मास्टर से मुलाकात हुई। नेता जी बोले, 'सुना है हाथी अकलमंद होते हैं। क्या यह सच है?'

रिंग मास्टर बोला, 'सच ही होगा। मैंने आज तक कभी अपने किसी हाथी को किसी नेता का भाषण सुनने जाते नहीं देखा।'



परिणाम

अंक नं० २८ में प्रकाशित प्रतियोगिताओं के परिणाम

वर्ग पहेली का हल

छू[1]	मं	त[2]	र[3]	■
ना	■	क[4]	ल	श[5]
म[6]	ना	ली	■	र्म
ना	■	फ[7]	ल[8]	ना
है[9]	जा	■	ता[10]	क

विजेता : रिंकू C/o तरणजीत सिंह
६०/१२ गांधी रोड, देहरादून २४८००१
(निर्णय लाटरी द्वारा)

सोचिये का हल

जब तक हम अपनी बात पूर्ण विश्वास के साथ नहीं कहेंगे कोई उस पर विश्वास नहीं करेगा।

विजेता का नाम

प्रभजोत सिंह
१६२-ए, शास्त्री नगर
माडल टाऊन, लुधियाना (पंजाब)

तुक्कम तुक्का का हल

बिगड़ा जो मुकद्दर तो क्या रंग दिखाया
जूतम पैजार का अपनी ही पार्टी में जमाना आया
पर ये सब भी मेरा कुछ बिगाड़ न पाया
टकटकी सब बांधते मैं कुर्सी पर फिर आया
ना हो जनता पार्टी (S) ग्रुप मुझे भाया
यही सही लेकिन फिर मंत्री पद तो पाया
करने में क्या जाता है हजम माल पराया

विजेता का नाम

रचना कुंवर
द्वारा प्रो० एच० एस० कुंवर
८. के० जी० के० कालिज
मुरादाबाद-२४४००१

कार्टून बनाये

विजेता : हरीश बहल
WZ-३५ मीनाक्षी गार्डन
नई दिल्ली-१८

शेर या कविता

विजेता : विश्वनाथ बंका
C/o गौरी शंकर संजय कुमार
६०/५२, नयागंज, कानपुर।

जब थे हम ट्रेन में, बत्ती हो गई गुल ?
सर ऊपर उठाया, तो देखा रेलवे पुल।
सर नीचे किया तो, सामान गायब थाकुल
जा रहे थे काशी, यहीं गये हम धुल।

अंक नं० २९ में प्रकाशित गेंद ढूंढ़ो प्रतियोगिता के विजेता—राजीव सक्सैना
के-१२, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली



★ एक व्यक्ति दौड़ा-दौड़ा डाक्टर के पास गया, 'डाक्टर जल्दी कीजिए मैं सोने की मोहर निगल गया हूं।'

डाक्टर, 'कब निगला ?'

व्यक्ति, दस साल पहले।'

डाक्टर, 'कमाल है दस साल पहले मोहर निगली और निकलवाने अब आ रहे हो ? अब तक क्यों नहीं निकलवाया ?'

व्यक्ति, 'मुझे अब तक पैसों की जरूरत नहीं थी।'

पृष्ठ १७ का शेष भाग

कहा—'अरे अब चलेगी भी या यहीं बैठे-बैठे डिनर मंगवाना पड़ेगा ?'

पद्मिनी ने सिर को झटक कर सैल्फ लगाया—हल्की-सी खड़खड़ाहट होकर रह गई—पद्मिनी चाबी ही घुमाती रह गई लेकिन सैल्फ केवल कटकट करके रह जाता था। पद्मिनी ने झल्लाकर स्टेयरिंग पर हाथ मारा और लड़कियों में से एक ने पूछा—'अब क्या मुसीबत हो गई ?'

'मुझे क्या मालूम ?' पद्मिनी झटके से बोली।

यह कहकर वह गाड़ी से उतर आई। उन लोगों ने एक जाते हुए टैक्सी ड्राइवर को रोककर उसे देखने की प्रार्थना की। ड्राइवर ने सैल्फ लगाकर देखा और बोला—

'मेम साहब...बैटरी डाउन है।'

'बैटरी डाउन है !' पद्मिनी ने कहा, 'मूर्ख क्यों बनाते हो मुझे—बैटरी डाउन होती तो सड़क से रगड़कर चलती - ।'

ड्राइवर हंसकर नीचे उतरा और बोनट खोलकर बोला—'मेम साहब बैटरी डाउन होने का मतलब है इसमें करंट नहीं है—यह देखिए इसकी फैन बैल्ट ढीली हो गई है।'

'इससे क्या होता है ?'

'डायनुमा बैटरी चार्ज करना बन्द कर देता है या कम कर देता है।'



'तो फिर अब क्या करें ?'

'अभी तो धक्के से स्टार्ट हो जाएगी—आगे किसी मिस्त्री से फैन बैल्ट टाइट करा लें।'

'तो फिर जरा धक्का लगा दो—तुम्हारी बड़ी कृपा होगी...।'

ड्राइवर धक्का लगाने ही लगा था कि उसकी टैक्सी में एक सवारी आन बैठी और वह चला गया। पद्मिनी ने गुस्से में पैर पटका और स्टेयरिंग पर बैठती हुई बोली—

'चलो...लगाओ धक्का...तुम सब।'

'हाय...हम धक्का लगाएं ?'

'और क्या...मजे भी तो तुम कर रही हो कार में बैठे...।'

लड़कियां विवशतः धक्का लगाने लगीं। पद्मिनी गीयर डालकर बार-बार क्लच छोड़ती रही। बहुत दूर जाकर अचानक कार स्टार्ट हुई और फुर्ती से भाग उठी। लड़कियां कार के पीछे भागती हुई चीखीं—

'अरे...अरे...।'

'ओ पद्मिनी की बच्ची...।'

'अरे...हमें तो लेकर चल...।'

पद्मिनी बौखलाकर गाड़ी रोकने का प्रयत्न करने लगी...जल्दी और घबराहट में उसने ब्रेक पैडल के स्थान पर क्लच पैडल दबा दिया था जिससे गाड़ी लहरें लेती हुई दौड़ने लगी थी। पद्मिनी के हाथ पांव फूल गए...राहगीर बच-बचकर इधर-उधर भागने लगे। एकाएक गाड़ी एक राहगीर की टांग से टकराई और वह चिल्लाया—

'अरे मर गया...मार डाला मुझे...।'

गाड़ी खम्बे से टकराकर रुक गई और इंजन झटके से बंद हो गया। पद्मिनी का पूरा बदन थर-थर कांप रहा था...उसकी आँखों से घबराहट झांक रही थी...अचानक चारों ओर से राहगीरों ने कार को घेरे में ले लिया। पद्मिनी कार से नीचे उतरी तो उसकी टांगें कांप रहीं थीं...डर से उसका चेहरा पीला पड़ गया था। राहगीर अपनी टांग पकड़कर लगातार चिल्लाए चला जा रहा था—

'मार डाला मुझे...लांगड़ा कर दिया...अरे अब मैं चलूं-फिरूंगा कैसे ? मेरे तो बाल बच्चे भूखे मर जायेंगे...हाय भगवान।'

'कर दिया लंगड़ा बेचारे को।' एक राहगीर बोला।

'यही क्या कम है कि प्राण बच गए ?' दूसरा बोला।

'और क्या, इन मेम साहब ने तो प्राण लेने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।' तीसरे ने कहा।

'यह गाड़ी वाले सड़क को अपने बाप दादा की ज़ागीर समझ लेते हैं।' पहले ने कहा।

'गरीबों को पैदल चलने का भी तो अधिकार नहीं।' कोई और बोला।

'अगर ड्राइविंग नहीं आती तो गाड़ी लेकर क्यों निकली थीं ?' एक ने टिप्पणी की।

इतने में सब लड़कियाँ भी भीड़ में से घुसकर कार के पास आ गईं...उनके चेहरे भी फक हो गए। इतने में भीड़ को चीरता हुआ एक लम्बा चौड़ा काले रंग का हट्टा-कट्टा आदमी अंदर घुसा जिसके बदन पर धारीदार बनियान और झली मैली पतलून थी...गले में रूमाल बंधा हुआ था...उसने सिर पर नाइट कैप पहन रखी थी घायल राहगीर को देखकर वह जल्दी से बोला—

'अरे चाचा क्या हुआ तुम्हें ?'

'अरे बेटा...इस लकड़ी ने तो मुझे अपंग बना दिया...मेरी टाँग हीतोड़ कर रख दी।

'अच्छा...!' अजनबी ने पद्मिनी को घूरकर देखा और बोला, 'क्यों मेम साहब ?'

'वह...वह...ग......ग......गलती हो गई...।'

'वाह क्या अदा है आपकी...।' अजनबी हाथ नचाकर बोला, 'किसी की जान गई आपकी अदा ठहरी अगर यह मर जाता तो ?'

'म...म...म...मरा तो नहीं।'

'मारने में कसर छोड़ी थी आपने...? और यह जो बेचारा अब जीवन-भर के लिए लंगड़ा हो गया है...उसके क्या आपकी टांग काटकर लगाई जाए ?'

'म...म...मम...मैं...।'

'क्या बकरी की तरह में में करती हैं...जानती है, चार बच्चों का बाप है...एक पत्नी है...दो जवान बहनें हैं...कम से कम पाँच सौ रुपये महीने का खर्चा है...इलाज करा के लंगड़ाकर चलने के भी योग्य हुआ तो उसमें कम से कम छः महीने लग जाएंगे और इलाज में दो-चार हजार रुपये खर्च होंगे सो अलग, चलिए दस हजार रुपये निकाल कर दीजिए इस गरीब को।'

'द...द...दस...हजार...।''

'सस्ते में फैसला कराए दे रहा हूं...चीं चपड़ करोगी तो बीस हजार से कम पर फैसला नहीं होगा...समझीं...तुम जानती नहीं हो गंगू दादा को...जो कह दिया वह पत्थर की लकीर है।



सवाल यह है ?
चुनाव के दिनों में कैसे कैसे हंगामे हुये ?
चुनाव में वोट नहीं मिलेगा न सही डीज़िल तो मिलेगा !
चुनाव में हर उम्मीदवार को 6000 लिटर डीज़ल मिलेगा
दो मुल्लाओं में मुर्गी हराम !
सुख शान्ति
जनता पार्टी
लोक दल
बाबू जगजीवन राम ने बार बार कहा कि हम जनता पार्टी का अधूरा काम पूरा करेंगे ! वास्तव में जो कहा वह कर दिखाया !!
यह जनता पार्टी की कब्र है
बाबू जी ने कहा इस बार भी चुनाव में एक ज़ोरदार लहर है ! कितनी ज़ोरदार थी ? यह हम से पूछिये !
लोक दल का असली चुनाव निशान
लोक दल और जनता पार्टी के नेता भूखों के लिये यह पकवान लेकर आये !
खेलों का विरोधी किसान नेता चुनाव में विकेट आउट हो गया !
आ गई
...आ गई---आ गई
जनता पार्टी
को वोट दो
तुम्हें क्या हो गया है ? बाहर तो गली के लड़के शोर मचा रहे हैं कि फिल्म "मीना कुमारी की अमर कहानी" आ गई !

ढोल की पोल

लोग रोज ही कई बातें कहते हैं लेकिन हर बात जो कही जाती है उसका तो सीधा अर्थ होता है। उसके पीछे उससे भी गहरा अर्थ होता है, वास्तव में हम सब पाखंडी हैं। सीधी सच्ची बात को भारी भरकम शब्दों में लपेट कर उसे नये अर्थ में सामने रखने का प्रयत्न करते हैं। आदमी जो बात कह रहा होता है उसका असली अर्थ कुछ और ही होता है। इसफीचर में आप यही पढ़ेंगे कि कोई यह बात कहे तो उसका असली मतलब क्या है—असली मतलबों का आनन्द उठाइये—

